नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

शांति हीरानंद का गजल गायिकी में योगदान

प्रिया मावी
शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार-संक्षेप

पद्मश्री विदुषी शांति हीरानंद जी की भारतीय संगीत के इतिहास में एक आकर्षक यात्रा रही है, जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत की ग़ज़ल गायकी के भविष्य को आकार देने में मदद की। शांति जी ने पारंपरिक गुरू-शिष्य बंधन द्वारा संगीत साधना में स्वयं को ढ़ालकर निरंतर अभ्यास किया। बाल्यावस्था से ही कला के प्रति समर्पण तथा निरंतर सीखने की लालसा ने उन्हें बेगम अख़्तर के अधीन संगीत शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। शांति हीरानंद जी बेगम अख़्तर के गायन और व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थी। उन्होंने ग़ज़ल, ठुमरी, दादरा आदि में उनसे गहन प्रशिक्षण लिया जिसके कारण उनकी गायकी को एक आकार प्राप्त हुआ। शांति जी ने 12 साल कर उम्र में लाहौर में अपना पहला रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसकी श्रोताओं द्वारा अत्यंत सराहना की गयी। प्रस्तुत शोध पत्र में शांति हीरानंद जी के ग़ज़ल सीखने-सिखाने व ग़ज़ल गायकी क्षेत्र में योगदान की सम्पूर्ण यात्रा के विषय में लिखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : ग़ज़ल गायिकी, बेगम अख़्तर, रेडियो कार्यक्रम, लखनऊ, ठुमरी

शोधपत्र

ग़ज़ल गायकी के विवेकी श्रोताओं के लिए विदुषी शांति हीरानंद अद्वितीय गायिका थी। आवाज की स्पष्टता, श्रृंगारिक शब्द, उच्च स्तर का स्वरों में उतर-चढ़ाव, व्यवस्थित आलाप, सर्वव्यापी शांत रस और सांगीतिक अभिव्यक्ति सभी का समन्वय उनमें मूर्तिमान था।

''संगीत उनके माध्यम से अनायास प्रवाहित होता था न की उनसे उद्भूत होता था। 1933 में एक सिंधी परिवार में लखनऊ में आपका जन्म हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ के म्यूजिक कॉलेज से हुई, जहां आपने रामपुर के उस्ताद एजाज हुसैन खान के सानिध्य में अपने सांगीतिक कौशल को समृद्ध किया। भारत के विभाजन के बाद, जब आपका परिवार लखनऊ लौट आया, तो आपने पुर्षोत्तम जलोटा (अनूप जलोटा के पिता) से प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके बाद, आपने बेगम अख़्तर (अम्मी) के पास अपने संगीत शिक्षा को नवीन रूप दिया।'' (Hiranand 46)

संगीत में रुचि की प्रवृत्ति आपमें प्रारंभ से ही दिखती है। आपने 1947 से संगीत की बैठकों में गाना शुरू किया तथा अपना पहला संगीत प्रदर्शन 1947 में ऑल इंडिया रेडियो लाहौर में दिया।

''भारत सरकार द्वारा पद्मश्री (2007) तथा प्रसाशन द्वारा अखिल भारतीय सिंधु सांस्कृतिक समाज पुरस्कार से आपको अलंकृत किया गया।''(Chakravorty)

आपकी गायिकी की लोकप्रियता का आकर्षण सीमित नहीं था अपेक्षित नाद लालित्य, उदात्ता, गहनता के एकत्र समावेश से आपका गायन अतिप्रितम हो उठा था। आपकी गायकी में काव्यात्मक भाव, उसकी शास्त्रीय मात्राओं को चित्रित करने वाला ज्ञान और कोमल भावनात्मक आकर्षण स्पष्ट दिखता था। आप सदैव अपनी मंचीय प्रस्तुति में कलात्मक जागरूकता की स्पष्ट भावना और शब्द सामग्री के लिए सुसंस्कृत भावना को प्रकट किया करती थी। अधिकतर गीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित होते थे और उन्हें आप सुंदरता से नाजुक व शांत भावनाओं को को दर्शाने के लिए प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया करती थी।

''आपने ग़ज़ल, ठुमरी और दादरा में आत्मा तथा मन को प्रफुल्लित कर देने वाली प्रस्तुतियों से अपनी गुरु बेगम अख़्तर की शैली को जीवित रखा। डांस ऑफ द विंड्स, एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित फिल्म है, जिसमें एक ठुमरी और दादरा है जिसे आपने अपनी विशिष्ट शैली में गाया है। एक और बहुप्रतीक्षित फिल्म में आपके द्वारा प्रदान किया गया थीम गीत भी था। आप 46 वर्षों से अधिक समय से आकाशवाणी पर गाती रही। आईटीसी संगीत सम्मेलन, सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, साहित्य कला परिषद में वर्ष दर वर्ष अपने अविस्मरणीय प्रादर्शन से दर्शकों को मंत्र मुग्ध किया। 1981 में भारत सरकार द्वारा आपको पाकिस्तान भेजा गया, आप पाकिस्तान में प्रदर्शन करने वाली पहली भारतीय महिला कलाकार थीं। जिन्होंने लाहौर, इस्लामाबाद, रावलपिंडी और कराची में संगीत कार्यक्रम दिए। आपके प्रत्येक संगीत कार्यक्रम को स्टैंडिंग ओवेशन मिला। उस समय भारत में पाकिस्तान की राजदूत ने भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को पाकिस्तान में आपके प्रदर्शन का एक पूरा एल्बम प्रस्तुत करते हुए कहा कि शांति

भारत की सच्ची राजदूत थी और यदि ऐसे राजदूतों से दो देशों के बीच संबंधों को जारी रखा जाता है तो दोनों देश सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण हो सकते हैं। आपने दुनिया भर में संगीत कार्यक्रम और व्याख्यान प्रदर्शन दिए - टोरंटो, वैंकूवर, बोस्टन, न्यूयॉर्क, मिल्वौकी, वाशिंगटन, लंदन और जिनेवा। ये आयोजन विदेशों में हिंदुस्तानी प्रकाश शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक शैली के प्रचार में महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर थे। आपको ग्रेटर वाशिंगटन के एशियाई भारतीय संघों की परिषद द्वारा सम्मानित किया गया। न्यूयॉर्क के सुर संगम सांस्कृतिक और शैक्षिक संगठन द्वारा और लंदन में भारतीय विद्या भवन द्वारा भी सम्मानित किया गया।'' (Kaleem)

भारतीय संगीत सदैव ही परिर्वतनशील रहा है इसमे राजनैतिक एवं सामाजिक बदलावों के साथ- साथ सभ्यताओं और संस्कृतियों का मिश्रण भी समय-समय पर हुआ है फलस्वरूप भारतीय संगीत के विविध गायन प्रकार एवं गायन शैलियाँ प्रचार में हैं। यदि सुगम संगीत की बात की जाए तो इसमें मुख्य रूप से चार शैलियों को सम्मलित किया गया है जो इस प्रकार है जैसे गीत, ग़ज़ल, भजन इत्यादि। ग़ज़ल के विषय में यदि बात करे तो ग़ज़ल मूलतः फारसी का शब्द है। जिसका तात्पर्य प्रणय प्रधान गीतों से होता है। यह मूलतः एक आत्मनिष्ठ या व्यक्तिपरक काव्य विधा है। प्रकारांतर से इसे यों भी कहा जा सकता है कि ग़ज़ल का शायर केवल वही बयां करता है, जो उसके दिल पर बीती हो। शायर के दिल पर जो गुजरती है, वह वही सब कुछ है जो दूसरों पर भी बीत चुका होता है इसलिए पाठक या श्रोता को ग़ज़ल में अपनी दास्तान सुनाई देती है। इसमें भावना, घटना, अनुभव, काव्यानुभव, सौन्दर्यात्मक अनुभव होता है परन्तु केवल इतना नहीं ग़ज़ल का दायरा इससे अधिक विस्तृत है। अनुभूति और भावनाओं के अतिरिक्त ग़ज़ल में चिन्तन का तत्व भी शामिल हो गया है नई ग़ज़ल का शायर केवल वही प्रस्तुत नहीं करता जो वह अनुभव करता है, बल्कि वह भी पेश करता है जो वह सोचता है या देखता है। ग़ज़ल में धुन की मार्मिकता के साथ-साथ उसका शब्दोच्चारण भी सही एवं स्पष्ट होना आवश्यक होता है। ग़ज़ल मुख्यतः श्रृंगाररस परक होती है। समय बदलता गया और ग़ज़ल में वीर तथा करुण रस के गीतों की रचनाएँ भी होने लगी किसी मार्मिक प्रसंग के आधार पर ही इसकी शब्द रचना होती है। अतः इसमें शब्द रचना की प्रधानता रहती है। ग़ज़ल में काव्य है और संगीत प्रेम भी है प्रेम की पुलक और विरह की वन्दना भी है। ग़ज़ल में प्रयुक्त छन्द ही उसके लय व ताल के निर्धारण का आधार होते हैं इसीलिए ग़ज़ल के साथ वाद्य संगीत (तबला) भी एक विशेष महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य भूमिका का निर्वाह करता है। ग़ज़ल गायकी के साथ तबला संगीत के मुख्यतः दो नियम होते हैं। प्रथम नियमानुसार ग़ज़ल के साथ सिर्फ ताल के ठेके और कुछ प्रकार ही बजाये जाते हैं तथा इसका प्रचार वर्तमान समय में चलचित्रों में तथा आधुनिक ग़ज़ल गायकी द्वारा विशेष रूप से हुआ है।

यह स्पष्ट सत्य है कि संगीत और साहित्य की मात्राओं में भिन्नता होती है। एक गीत की शब्द रचना और स्वर रचना करते समय दोनों की मात्राओं में सर्वांगसमता का होना अनिवार्य नहीं है और ग़ज़ल के लिए यह निर्विवाद मान्यता है। कि ग़ज़ल में गेयत्व ग़ज़ल का प्राणाधार अविच्छिन अंग है। इसका अर्थ यह नहीं कि ग़ज़ल की शब्द रचना करते समय शायर को सांगीतिक लय से प्रभावित होकर निरंकुश रूप से व्याकरण विरुद्ध अवांछित शब्द योजना गढ़ने की छूट है। ग़ज़ल छंदोबद्ध काव्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें छन्द की उपेक्षा किसी भी सूरत में करना स्वीकार्य नहीं है। हिन्दी ग़ज़ल हिन्दी के यांत्रिक छन्द पर आधारित होती है। उर्दू फारसी की ग़ज़ल का केवल रूपकार इस्तेमाल करना चाहिए, उसकी भाषायी रूप, काव्य शास्त्र अथवा छन्द नही। ग़ज़ल में प्रेम की रमणीयता और उसको व्यक्त करने वाले शब्द व स्वर ताल का ऐसा सम्मिश्रण हो गया है कि यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेम के कारण गीत रमणीय हो गया है। 'ग़ज़ल' संगीत की एक परिपूर्ण शैली है। इसमें किसी प्रकार के राग का श्रोताओं का, स्थान का, संगत आदि का बन्धन अनिवार्य नहीं। थोड़े समय में अधिक आनन्द देने का इसमें सामर्थ्य है। ग़ज़ल ही एक ऐसा प्रकार है, जिसे गायक थोड़ी साधना के बाद गा सकता है।

''ग़ज़ल को जवानी का हाल बयान करने वाली और माशूक की संगति व मनोस्थिति का जिक्र करने वाली अभिव्यक्ति कहा गया है। अरबी में ग़ज़ल काअर्थ कातना या बुनना होता है। ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति 'गजाल' शब्द से भी स्वीकारी गई है, इसका अर्थ हिरण होता है। इसके आधार पर ग़ज़ल को हिरण की चैकड़ी की तरह प्रेम व्यापार की काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी कहा गया है।'' (अब्बासी 10)

''संगीत कला हो अथवा कोई भी अन्य ललित कला, किसी का भी तात्विक विवेचन करने के लिए कुछ ऐसे घटक, अव्यय मापदंड निर्धारित किए जाते है जिनके द्वारा विवेचन विभिन्न प्रकार के आलोचनात्मक पथों से गुजरता हुआ परिणाम के रूप में चरम परिणीति को प्राप्त होता है।'' (सहगल)

आपको बेगम अख़्तर साहिबा की गायन शैली, अनूठी भावनाये व महानता ने इतना प्रभावित किया कि आप जीवन पर्यन्त उसी गायन शैली में डूबी रही। शांति हीरानंद के प्रदर्शनों की सूची में दर्जन से अधिक ग़ज़ल और दादरा शामिल थे, जिनमें से कुछ में परिचित कवियों की जैसे जिगर मुरादाबादी की 'वो अदा ए दिलबरी' जैसी ग़ज़लों के बराबर प्रदर्शन से उनका नाम ज्वलंत छवियों के साथ जुड़ा हुआ था। रेडियो के कलाकार होने की वजह से ज्यादातर मात्रा में दर्शकों में लोकप्रिय रहने और उनका प्यार पाने में कामयाबी मिली दर्शकों का यही प्यार व समर्थन आपकी ऊर्जा और प्रेरणा का स्त्रोत बना।

आपकी ग़ज़लों में काव्यात्मक भाव, गहरी आवाज में जोरदार स्वर उत्पादन, कुछ वाक्यांश के उच्चारण का विशेष तरीका, बढ़त की धीमी गति आपका अंदाज था। आपकी गुरु, बेगम अख़्तर, के विशिष्ट स्वर में ढली हुई हर विशेषता ने हाल ही में हमें एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया और पुरानी यादों की एक भीड़ को वापस ला दिया था। बेगम साहिबा के लाइव कार्यक्रम जिसमें शांति जी उत्कृष्ट मुखर समर्थन प्रदान करती थीं। उस तरह का सामूहिक स्वर-निर्माण और आरामदेह शैली अब बहुत दुर्लभ हो रही है।

लखनऊ में शांति हीरानंद ने 1954 से बेगम अख़्तर के लिए मुखर समर्थन प्रदान किया और अक्टूबर 1974 के महीने में शानदार रेडियो संगीत सम्मेलन में इस प्रकार शैली को आत्मसात कर लिया। शांति जी ने ईमानदारी से इसे किसी अन्य शैलीगत प्रभाव से अप्रभावित रखा। तबले पर वयोवृद्ध भगवानदास तथा सारंगी मदन मोहन उपाध्याय के साथ। शांति जी ने मिश्र खमाज में 'जारे जा ते कागा, पिया से मोरा संदेस्वा कहियो' में धीमी गति वाली ठुमरी के साथ शुरूआत की। प्रत्येक वाक्यांश को इत्मीनान से समझाया और कुछ 'खटके' के साथ 'दादरा' हालांकि एक ही राग में था, एक जीवंत गति में गाया उन्होंने शब्दों का विस्तार करते हुए गारा और सुर-मल्हार जैसे रागों की कुछ झलकियों को मिश्रित किया।

बाल्यावस्था से ही आपने अनेक रचनाएँ की। वो समय था जब आपने ग़ज़ल की दुनिया में कदम रखा और उसके साथ संवाद शुरू किया। आपकी गायकी ने नई ऊर्जा, नयी सोच और शिल्प का अद्वितीय संगम प्रस्थापित किया। आपने वहाँ से अपनी संगीत यात्रा शुरू की, जो आज तक आपकी पहचान का सबब बनी है। छात्र जीवन से लेकर आज तक, आपने संगीत की माध्यम से अपनी कला को समृद्धि और प्रगति की दिशा में बदला। वह समय, जब आपने संगीत के साथ अपनी पहचान बनाई, एक नया संगीतमय सफर शुरू हुआ था जो आज भी आपके संगीत के रूप में प्रतिबिम्बित हो रहा है। आपने ग़ज़ल गायकी में अनेक ग़ज़लों के निर्माण किये थे। कविताओं को स्वर-ताल-बद्ध करने के अलावा विदुषी शांति जी ने अमिता परशुराम, जिगर मुरादाबादी, फैज अहमद फैज, शकील इत्यादि प्रतिष्ठित, चिंतनशील एवं प्रौढ़ कवियों की कविताओं को संगीतबद्ध किया। अतः एक अच्छे गुरु के संरक्षण में दीक्षित होकर जहाँ आपके एक कलाकार के रूप में स्थापित होने न की सारी संभावनाएँ दिखी वही नवीन संगीत का सृजन करने की आपकी विशिष्ट प्रतिभा में हमें एक उत्तम संगीतकार की प्राप्ति हुई। इस प्रकार गहन शिक्षण के परिणाम स्वरूप एक 'कलाकार' तथा ईश्वरीय देन के रूप में विद्यमान संगीत सर्जना की अद्भुत क्षमता से युक्त उत्तम गायकी विदुषी शांति हिरानंद के व्यक्तित्व में समाहित थी। इनके द्वारा रचित नई बंदिशों में राग विशेष की समस्त विशेषताएँ परिलिक्षित होती हैं।

विदुषी शांति हीरानंद के प्रदर्शनों की सूची में दर्जन से अधिक ग़ज़ल और दादरा शामिल थे, जिनमें से कुछ में परिचित कवियों की जैसे जिगर मुरादाबादी की 'वो अदा ए दिलबरी' जैसी ग़ज़लों के बराबर प्रदर्शन से उनका नाम ज्वलंत छवियों के साथ जुड़ा हुआ था।

कुछ रचनाएँ जो आपके दिल के करीब थीं जैसे-शाम-ए-फिराक अब न पूछ-फैज, आप जिनके करीब होते है, ऐ मोहम्म तेरे अंजाम पे, कभी बन संवर के आ गए, कोई उम्मीद भर नहीं आती-मिरजा गालिब, क्या चीज थी- जिगर, कभी नब संवर के आ गए, मेरे हम नफस मेरे हम नवा-शकील, खुशी ने मुझको ठुकराया है इत्यादि आपके द्वारा रचना की गई कुछ प्रमुख ग़ज़लों में से एक 'आप जिनके करीब होते हैं' ग़ज़ल में शुद्ध स्वरों का प्रयोग इसे राग बिलावल के समीप दशार्ता है। 'आप जिनके करीब होते हैं' पंक्ति में ग, प, ध, नि, सां स्वर संगति बिलावल की उपस्थिति का भान करवाती है। इस ग़ज़ल की स्वर रचना ताल कहरवा में निबद्ध है।

आप ही की पसंदीदा गज़लों में से 'कब तक दिल की खैर मनावें' फैज अहमद फैज के प्रसिद्ध गीतों में से थी जिसे आपने कवि की उपस्थिति में गाया। जब आप अपनी अंतिम यात्रा पर भारत में थी आपने इसे बार-बार बड़े और छोटे दर्शकों के लिए गाया है और हर बार इसे मुहावरों के नए मोड़, कविता की नई व्याख्या से अलंकृत किया। इस ग़ज़ल में इसकी स्थायी का भाग राग तिलक कामोद में निबद्ध प्रतीत होता है। विशेषकर 'दिखलाओगे' शब्द की स्वर रचना में म, ग, स में जो मींड है उससे यह पुष्टि होती है कि इसमें तिलक कामोद प्रतीत होता है तथा अंतरे में राग देस की छाया प्रतीत होती है जैसे–रे म प, रे म प नि ध प रे म प। साथ ही हमें तिलक कामोद भी देखने को मिलता है जैसे–म प सा प। इस तरह से यह दोनों ही राग देखने को मिलते हैं। (Hiranand)

अन्य ग़ज़ल 'कोई कहदे गुलशन गुलशन' ग़ज़ल के स्वर राग जनसम्मोहिनी से मिलते-जुलते हैं। राग जनसम्मोहिनी पं. रवि शंकर द्वारा कर्नाटक संगीत से हिन्दुस्तानी संगीत में शामिल किया गया है। इस राग में ऋषभ की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। राग के वादी-संवादी पंचम व षड्ज हैं। इस राग में ऋषभ वर्ज्य करने से यह राग कलावती बन जाएगा। इसलिए इसमें एक ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो ग़ज़ल के स्वरों में भी प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती है। इस ग़ज़ल में 'धैवत' स्वर का प्रयोग देखने को मिला जो की जनसम्मोहिनी में वर्ज्य नहीं है। अतः यह ग़ज़ल पूर्णतः राग जनसम्मोहिनी पर आधारित है। यह तो नहीं कहा जा सकता परंतु इसके स्वर एवं रचना का ढांचा राग जनसम्मोहिनी से काफी मिलता है।

'कभी चाँद राहों में खो गया' यह ग़ज़ल जिसको आप अधिकतर मंचों में गया करती। इस ग़ज़ल की स्वर रचना का आलंकन करने से यह ज्ञात होता है की यह पाश्चात्य संगीत के नेचुरल माइनर स्केल पर आधारित है जो हिंदुस्तानी संगीत के थाठ आसावरी के सांप्रकृतिक है। परंतु कई जगह कुछ स्वर संगीतियों में राग दरबारी कान्हड़ा का प्रयोग मिलता है जो की आसावरी राग का ही एक ठाट है। इस ग़ज़ल के अंतरे में 'लो लचक गई' की स्वर रचना में 'ध नी रे' का स्वर संगति राग दरबारी के उपस्थित होने की पुष्टि करती है इस ग़ज़ल की स्वर रचना ताल रूपक में निबद्ध है। (Hiranand)

अतः आप निरंतर अभ्यास से कठिन संगीत की कठिन साधना में अपना जीवन व्यतीत करती रहीं। अपनी शिक्षण पद्धति को कायम रखते हुए, अपने अक्षय संगीत कोष से गुरु शिष्य परंपरा के अन्तर्गत अनेक योग्य शिष्यों को खुले हृदय एवं किसी भी धन की लालसा के बिना प्यार अपनत्व की भावना से संगीत शिक्षा का महादान देकर महान विपुल यश अर्जित किया। आपके शिष्यों की समृद्ध परंपरा रही। आपके शिष्य उच्च कोटि के कलाकार के साथ साथ अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं में भी कार्यरत हैं। देश विदेश में आपके कई शिष्य गायन में ख्याति अर्जित कर आपके गौरव में वृद्धि कर रहे हैं। आपके शिष्य परंपरा में प्रमुख नाम हैं - जैसे-डॉ. पूजा गोस्वामी पवन, डॉ. राधिका चोपड़ा, स्वर्ण विज, विद्या राव, विद्या शाह, सुदीप बनर्जी आदि।

इस रूप में, आपके और आपके शिष्यों ने संगीत क्षेत्र में देश-विदेश में प्रमुख पहचान बनाई है आपकी शिक्षा और मार्गदर्शन ने उन्हें संगीत क्षेत्र में उच्चतम स्तर तक पहुँचने में मदद की है। आपका संगीत, विशेषकर एक ग़ज़ल गायिका के रूप में, न केवल आकर्षक है, बल्कि यह संगीत समुदाय को भी प्रशिक्षण और सांस्कृतिक समृद्धि में सहायक है। आपकी शिक्षा का एक प्रमुख परिणाम यह है कि आपके शिष्य अब भी विश्व स्तर पर संगीत के क्षेत्र में उभरते हुए दिख रहे हैं, जो आपके अद्वितीय और सुरीले संगीत के विरूद्ध मौजूदा समय में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Hiranand, Shanti, The Story of My Ammi, Viva Books Originals, First Published in 2005

Chakraborty Tapas, Tomb Tribute to Begum Akhtar, Hindustan Times, Oct 29, 1986

Kaleem, Omar, Shanti Hiranand's Voyage to Pakistan, The Hindu, Friday, Aug 18, 1995

नूर्वी अब्बासी, ग़ज़ल एक सफर, शब्दकार, दिल्ली, 1995

सहगल, सुधा एवं मुक्ता, बेगम अख्तर एवं उपशास्त्रीय संगीत, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007

Hiranand Shanti, Yeh hai Gazal, Kab Tak Dil Ki, Accessed on 22 Jan, 2022
https://youtu.be/_hPqC-Lz7AE?feature=shared

Hiranand, Shanti, Yeh Hai Gazal, Kabhi Chand Raho Me Kho Gaya, 22 Jan, 2022
https://youtu.be/9PfKAIjxA5Y?feature=shared